पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.11.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥



युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

वर्ष-43 अंक-10 कार्तिक-2083 दयानन्दाब्द 202 01 नवम्बर से 15 नवम्बर 2026 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.11.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम



केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली

143वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम



सोमवार, 09 नवम्बर 2026, शाम 4.00 से 8 बजे तक

स्थान: आर्य समाज जे. ब्लाक, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

यज्ञ: सायं 4 से 5 बजे तक, ब्रह्मा: आचार्य मोहन शास्त्री जी

मुख्य यजमान: सुनीता-वीरेश बुग्गा, करुणा-तिलक चांदना, सुषमा-अनिल कंवर, विनय-सुरेखा चोपड़ा

गायक कलाकार

सुदेश आर्या गौरव आर्य नरेन्द्र आर्य 'सुमन' प्रवीन आर्या 'पिंकी'

मुख्य अतिथि : श्री मनजिंदर सिंह सिरसा (मंत्री दिल्ली सरकार), कमलजीत सहरावत (सांसद) योगेन्द्र चन्दोलिया (सांसद)

अध्यक्षता: श्री सुभाष आर्य (पूर्व महापौर, दिल्ली)

विशिष्ट अतिथि : श्री आनन्द चौहान, सतीश गर्ग (कोषाध्यक्ष, भाजपा), यशपाल आर्य (पूर्व पार्षद), शशी तलवार (पार्षद)

गरिमामय उपस्थिति: सर्वश्री सुषमा-विजय पाहुजा, आर.पी. सूरी, अशोक सूरी, ठाकुर विक्रम सिंह, अविनाश बंसल (अभिनदंन वाटिका, मुंडका), ओम सपरा, एस.एन. डंग, रवि चड्डा, जितेन्द्र खरबंदा, सत्यानन्द आर्य, के.एल. राणा, डालेश त्यागी, एस.के. छतवाल, राजेन्द्र लाम्बा, डॉ कर्नल विपिन खेड़ा, प्रेम छाबड़ा, शशि तुली, ममता शर्मा, एस. के. आजमानी, भूपेन्द्र कुमार, ओमवीर सिंह, भोपालसिंह आर्य, अमरसिंह आर्य, संजय सपरा, ज्योति ओबराय, सुरेन्द्र गुप्ता, डॉ. रचना चावला, अंजू जावा, नरेन्द्र कस्तूरिया, नरेन्द्र अरोड़ा, जितेन्द्र आर्य, सोहनलाल आर्य, अरूण आर्य, संजीव महाजन, कृष्णा पाहुजा, ओमप्रकाश गुप्ता, सुदेश डोगरा, आस्था आर्या, सुनील गुप्ता, प्रेम सचदेवा, जीवनलाल आर्य, सुशील बाली, आदर्श आहुजा, उर्मिला-महेन्द्र मनचंदा, अनिता ग्रोवर, राजेश मेहन्दीरत्ता, कुसुम भंडारी, सतीश नागपाल, जगदीश मलिक, शान्ता तनेजा, राधा-दशरथ भारद्वाज, विनोद कालड़ा, रजनी गर्ग, नीरज भंडारी, सीमा-रोहित ढींगरा, सन्तोष कुमार, यशपाल आर्य, आरती खुराना, प्रवीण तायल (ब्रिज एवं कम्पनी), सुरेन्द्र वधवा, संतोष वधवा, सुरेन्द्र बुद्धिराजा, चन्द्रमोहन खन्ना, नेत्रपाल आर्य, राकेश मल्होत्रा, शशी प्रभा आर्य, राजरानी अग्रवाल, विनीता चावला, अजय तनेजा, विजय कपूर, अशोक आर्य, किरण सहगल, देवेन्द्र आर्य बन्धु, माया राम शास्त्री, वेदपाल आर्य, विक्रांत चौधरी, मानवेन्द्र शास्त्री, रामफल खर्ब, सुरेन्द्र कोछड़।

आर्य महिला रत्न अवार्ड से सम्मानित होगें

श्रीमती सुरेखा चोपड़ा
श्रीमती मधु बेदी
डॉ. दीप्ती कैटरीना
श्रीमती सुधा गुप्ता
श्रीमती डिम्पल भंडारी
श्रीमती रेणु त्यागी
श्रीमती उमा सोनी
श्रीमती सुरिभि सेठी
श्रीमती अंजु राणा
श्रीमती सरला बत्रा
श्रीमती निर्मल प्रभा आर्य
श्रीमती नीलम कोचर
श्रीमती सुनीता गोस्वामी
श्रीमती राजबाला कंसल

आमंत्रित आर्य नेता: सर्व श्री अशोक कथूरिया, सोमनाथ पुरी, धर्मदेव खुराना, मीना आर्या, किरण सेठी, अशोक गुप्ता, मैथिली शर्मा, आनन्द प्रकाश गुप्ता, संजीव आर्य, प्रोमिला गुप्ता, विजय हंस, इन्द्रजीत महाजन, संजीव सेठी (फरन्टीयर बिस्कुट), सोहनलाल मुखी, प्रकाशचंद आर्य, माता शीला ग्रोवर, अनीता कुमार, अशोक आर्य, नरेश विज, आदर्श सलूजा, अनिल अरोड़ा, डॉ. विशाल आर्य, कृष्णकुमार यादव, सुरेश आर्य, गोपाल आर्य, सुदेश भगत, वीरेन्द्र आहूजा, यज्ञवीर चौहान, स्वर्णा सेतिया, देवेन्द्र गुप्ता, महेश शर्मा, अजय चौधरी।

आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

ऋषि लंगर रात्रि : 8 बजे, प्रबन्धक:गौरव झा, वरूण आर्य, रोहित सिंह, काशीराम, मोहित आर्य

-: निवेदक :-

अनिल आर्य राष्ट्रीय अध्यक्ष	महेन्द्र भाई राष्ट्रीय महामंत्री	ओमप्रकाश अरोड़ा प्रधान समाज	यशोवीर आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	अनिल कवंर मंत्री समाज	सौरभ गुप्ता संगठन मंत्री
दुर्गेश आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	सुरेश आर्य, देवेन्द्र भगत राष्ट्रीय मंत्री	प्रवीण आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	संतोष शास्त्री, हर्षदेव शर्मा राष्ट्रीय मन्त्री	अरूण आर्य प्रदेश महामन्त्री	गवेन्द्र शास्त्री बौद्धिक अध्यक्ष
रामकुमार सिंह राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	धर्मपाल आर्य राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	वेदप्रकाश आर्य राष्ट्रीय मन्त्री	गोपाल जैन, दिनेश आर्य, वीरेश आर्य, गौरव सिंह आर्य प्रबंधक गण		

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, मो. 9810117464, 9013137070, 9958889970

E-mail: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

हिन्दू जाति का भयंकर भ्रम – आत्मरक्षा की अनिच्छा और शत्रुबोध का अभाव

— पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय

परस्पर–विरोधी सब विचार सत्य कैसे ?

हिन्दू जाति के अनेक रोगों में से एक भयंकर रोग यह है कि ये लोग संसार के सभी धर्मों को सच्चा मानते हैं। यदि मुसलमानों से पूछों तो वे कहेंगे कि हमारा धर्म अन्य धर्मों की अपेक्षा श्रेष्ठ है और अन्य धर्म इससे निष्कृष्ट हैं। ईसाई लोगों का भी यही विश्वास है कि सच्चा धर्म केवल ईसाई धर्म है। उसके सामने कोई धर्म नहीं ठहर सकता। परन्तु हिन्दू लोगों की ऐसी गति है कि वे अपने धर्म और दूसरे धर्मों में कोई भेदभाव नहीं रखते। यदि तुम एक ईश्वर को मानते हो तो भी सच्चे, अनेक ईश्वरों को मानते हो तो भी सच्चे। यदि ईश्वर को साकार मानो तब भी कुछ हानि नहीं, निराकार मानो तब भी कुछ हानि नहीं। यदि तुम मूर्तिपूजक हो तब भी भला, और यदि तुम मूर्तिपूजा का खण्डन करते हो तो भी भला। जिस धर्म में गाय को बलि देना पुण्य समझा जाता है वह भी इनके लिए श्रेष्ठ धर्म है, और जिस धर्म में गाय को माता के समान पूजा जाता है वह भी श्रेष्ठ धर्म है। जो ईसा को ईश्वर का अवतार मानते हैं और जो श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते हैं उनको भी मुक्ति मिलेगी।

कोई उत्तर नहीं देते – यह विचार केवल अशिक्षित पुरुषों के ही नहीं किन्तु शिक्षित पुरुषों का दृष्टिकोण भी ऐसा ही है। जिस प्रकार इनके धर्म में चींटी मारना पाप है, इसी प्रकार किसी दूसरे धर्म की वास्तविक त्रुटियों पर आक्षेप करना भी पाप है। जब कोई ईसाई कहता है कि तुम ईसा मसीह पर ईमान लाओ वह ईश्वर का अवतार था, तो हिन्दू बेचारा इतना ही कह सकता है कि जिस प्रकार ईसा ईश्वर का अवतार था उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी ईश्वर के अवतार थे। परन्तु ईसाई इतना सुनकर चुप नहीं हो जाता; वह झट कह उठता है, 'नहीं श्रीकृष्ण ईश्वर का अवतार नहीं हो सकता। ईश्वर का सच्चा अवतार केवल ईसा मसीह था जिसने हमारे लिए जान दी, जो हमारे लिए सूली पर चढ़ा। जो श्रीकृष्ण जो गोपियों के साथ विहार करता था वह ईश्वर का अवतार नहीं हो सकता। ईसा शुद्ध–पवित्र था, श्रीकृष्ण शुद्ध–पवित्र नहीं।' हिन्दू महाशय इतना सुनकर चुप हो जाते हैं। उनका साहस नहीं पड़ता कि ईसाई धर्म पर कुछ भी आक्षेप करें। आक्षेप करें तो कैसे करें? उनके धर्म में तो सभी धर्मों को अच्छा मानने का सिद्धान्त है। जब मुसलमान इनके धर्म में दोष बताते हैं तो उनसे भी गिड़गिड़ाकर यह इतना ही कह सकते हैं कि जिस प्रकार तुम नमाज़ पढ़कर ईश्वर की पूजा करते हो वैसे ही अपने मन्दिरों में ईश्वर को पूजते हैं। तुमको नमाज़ पढ़ के मुक्ति मिलेगी और हमको मन्दिर में शिव की पूजा करके। परन्तु मुसलमान झट उनकी बात का खण्डन करके कहता है 'नहीं। आदमी की मुक्ति केवल मुसलमान होकर हो सकती है, अन्यथा नहीं।' इसका हिन्दू महाशय कुछ भी उत्तर नहीं देते ।

जातीय रक्षा की इच्छा ही नहीं बनी –इस भावना का सबसे बड़ा प्रभाव यह हुआ कि हिन्दू जाति में अपने धर्म अपने जातित्व की रक्षा के लिए इच्छा और साहस दोनों नहीं रहे और अन्य जातियों तथा धर्म वालों ने शनैः शनैः इनको लगभग मार डाला। जिस जाति में आत्मरक्षा का भाव न हो उस जाति को परमात्मा भी नहीं बचा सकता, क्योंकि ईश्वर उसी की रक्षा करता है जो स्वयं अपनी रक्षा करता है। प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में आत्मरक्षा का भाव स्वभावतः रखा गया है। यदि वह आदमी अपनी रक्षा के लिए हाथ–पैर मारता है तो उसे सहायता मिलती है; किन्तु जिसने आत्मरक्षा का उद्योग छोड़ दिया वह जाति शीघ्र ही नष्टप्राय हो जाती है।

वीर पर्व विजय दशमी पर गोष्ठी सम्पन्न

सरदार पटेल अद्भूत संगठन कर्ता थे – अनिल आर्य



शनिवार 31 अक्तूबर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में जय दशमी वीर पर्व के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह करोना काल से 8व9 वाँ वेबीनार था। योगाचार्य एवं प्राकृतिक चिकित्सक श्रुति विजय सेतिया ने अपने उद्बोधन में विजय दशमी के सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भगवान राम की विजय को अधर्म पर धर्म, अन्याय पर न्याय तथा अहंकार पर सदाचार की विजय के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि विजय दशमी का संदेश केवल रावण के पुतले का दहन करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि हमें अपने भीतर विद्यमान अहंकार, क्रोध, लोभ और अन्य बुराइयों को भी समाप्त करने का संकल्प लेना चाहिए। वास्तविक विजय तभी सार्थक है, जब हमारे आचरण में सत्य, संयम और सदाचार दिखाई दें। नारी शक्ति के विषय में उन्होंने माँ दुर्गा के स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा कि नारी शक्ति, साहस, सृजन और संरक्षण की प्रतीक है। नारी का सम्मान केवल शब्दों या उत्सवों तक सीमित न रहकर परिवार, समाज और कार्यस्थल पर उसके अधिकारों, सुरक्षा और गरिमा के रूप में दिखाई देना चाहिए। जिस समाज में नारी का सम्मान होता है, वही समाज सशक्त और संस्कारित बनता है। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण पर बल देते हुए कहा कि पर्वों को मनाते समय प्रकृति और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं भूलनी चाहिए। प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों से बचते हुए स्वच्छ, पर्यावरण–अनुकूल और जागरूक तरीके से त्योहार मनाना समय की आवश्यकता है। अपने संदेश में उन्होंने आह्वान किया कि विजय दशमी को केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आत्मसुधार, नारी सम्मान, सामाजिक सद्भाव और पर्यावरण संरक्षण के संकल्प–पर्व के रूप में मनाया जाए। जब व्यक्ति अपने भीतर की बुराइयों पर विजय प्राप्त करेगा, तभी समाज में वास्तविक परिवर्तन संभव होगा। उन्होंने संदेश दिया कि सच्ची विजय वही है, जो व्यक्ति के चरित्र को श्रेष्ठ बनाए, नारी को सम्मान दिलाए और प्रकृति को सुरक्षित रखे। मुख्य अतिथि कृष्णा चंरनरं एवं अध्यक्ष राज श्री यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए सर दार पटेल जयंती पर उन्हें याद करते हुए अद्भूत संघठन कर्ता बताया और श्रद्धांजलि अर्पित की और प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यबाद ज्ञापन किया।





प्रथम चित्र में आदर्श रामलीला कमिटी अशोक विहार फेज 2 दिल्ली द्वारा परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य का अभिनंदन किया गया। साथ मैं आरएसएस के राष्ट्रीय महासचिव श्री रामलाल जी सांसद योगेन्द्र चांदोलिया कार्यक्रम अध्यक्ष अरुण बंसल सतीश गर्ग ने सभी का अभिनंदन किया। **द्वितीय चित्र** में रविवार 11 अक्टूबर 2026 आर्य नेता डॉ गज राज सिंह आर्य के पौत्र के नामकरण समारोह श्रद्धा मन्दिर स्कूल फरीदाबाद में राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य सम्मिलित हुए उनके साथ डॉ गज राज सिंह आर्य स्वामी ओमकार नंद जी प्रवीन आर्य पिंकी राजेश कुमारी आदि पुनः हार्दिक बधाई।

अलवर में आर्य विचार गोष्ठी सम्पन्न

शताब्दी वर्ष में युवाओं को जोड़ने का अभियान चलाएंगे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य



अलवर, बुधवार 21 अक्टूबर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि यह वर्ष अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान का 100 वाँ वर्ष हैं सभी आर्य जनों का कर्तव्य बनता है कि वह स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन परिचय से युवा पीढ़ी को परिचित करवायें जिससे वह अपने पूर्वजों पर गर्व कर सके इसके लिए खेल प्रतियोगिताओं का सहारा भी लिया जा सकता है जैसे क्रिकेट बाली बाल फुटबाल जिससे युवा जुड़े अनिल आर्य आर्य समाज दयानन्द मार्ग अलवर राजस्थान में बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जगदीश गुप्ता ने बताया कि हमारे अलवर में चार कन्या विद्यालय हैं जिनमें 4500 बालिकाएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।मंत्री प्रदीप आर्य ने कुशल संचालन करते हुए बताया कि हम प्रति माह कार्यक्रम करके बच्चों को संस्कारवान बना रहे हैं एवं आर्य कन्या विद्यालय महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं को प्रदान कर रहा है। पिंकी आर्य ने प्रभु भक्ति का भजन सुनाया। प्रमुख रूप से धर्म वीर आर्य सौरभ आर्य आस्था आर्य उपस्थित थे।

प्रोफेसर अशोक कुमार आर्य द्वारा आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन समारोह का आयोजन

सर्व समस्याओं का एक मात्र समाधान है आर्यसमाज रू स्वामी आर्यवेश

कर्म योद्धा कभी विश्राम नहीं लेते अभिन्नदन ग्रन्थ का विमोचन

स्वामी आर्यवेश, ठाकुर विक्रम सिंह, स्वामी आदित्यवेश, आ. डॉ. सुमेधा, आ. चंद्रशेखर शास्त्री, आ. अखिलेश मेधावी आदि सहित देश भर से पधारी नामचीन हस्तियां अमरोहा। आर्यावर्त केसरी के प्रधान संपादक, जे. एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज, अमरोहा के पूर्व प्राध्यापक तथा के. ए. (पीजी) कॉलेज, कासगंज के सेवा निवृत्त प्राचार्य प्रो. अशोक कुमार रूस्तगी (आर्य) की ओर से जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज के श्री अभिनंदन सभागार में आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इस अभिनंदन समारोह एवं पुस्तक विमोचन कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान एवं सुविख्यात संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा राष्ट्र निर्माण पार्टी एवं मनु संस्कृति संस्थान के संस्थापक एवं अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन, वैदिक वंदना तथा राष्ट्र गीत वंदे मातरम् से हुआ। इस अवसर पर शिक्षाविद पूर्व प्राचार्य, आर्यावर्त जन उत्पन्न न्यास (पंजी.) के अध्यक्ष तथा अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र– पत्रिकाओं के प्रधान सम्पादक डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) का भव्य अभिनंदन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश, स्वामी आदित्यवेश, ठाकुर विक्रम सिंह, गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा, आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री, आचार्य अखिलेश मेधावी सहित अनेक विशिष्ट जनों ने संयुक्त रूप से किया।

इसी क्रम में डॉ. (रुस्तगी) आर्य के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित एक अभिनंदन ग्रन्थ 'कर्म योद्धा कभी विश्राम नहीं लेते' का भव्य विमोचन मंच पर उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने किया तथा प्रख्यात शिक्षाविद्, पूर्व प्राचार्य एवं पत्रकार डॉ. आर्य के प्रति शुभकामनाएं एवं उनके दीर्घजीवन व आरोग्यता की मंगलकामनाएं की गईं। इस अवसर पर सभा प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने अभिनन्दन ग्रंथ पर बोलते हुए कहा कि वास्तव में यह ग्रन्थ समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत तो बनेगा ही, साथ ही, डॉ. आर्य की कर्मठता व कार्यकुशलता का भी परिचायक होगा। उन्होंने डॉ. आर्य को अपनी शुभकामनाएं देते हुए उनके दीर्घ जीवन की कामना की और कहा कि डॉ आर्य के इस सामाजिक व शैक्षिक अवदान में उनकी सह धर्मिणी प्रो. बीना आर्या का भी बड़ा योगदान है अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में पूज्य स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान में देश प्रगति के अमृतकाल में है, पर समाज में विवेक का ह्रास, नशा, जातिवाद और अश्लीलता बढ़ रही है। हमें महर्षि दयानंद के स्वराज्य, स्वदेशी, स्वभाषा और वेदों की ओर लौटो के मंत्र को अपनाना होगा।

उन्होंने कहा कि राष्ट्र तभी सशक्त होगा जब युवा वैदिक विचारधारा से जुड़ेगा, नारी का सम्मान होगा और गौ–रक्षा, नशामुक्ति व चरित्र–निर्माण को राष्ट्रीय नीति बने। आर्य समाज राष्ट्र की आत्मा है, आर्यसमाज का चिंतन, वसुधैव कुटुम्बकम तथा कृण्वंतो विश्वमार्यम् ही समाधान है। इसी श्रृंखला में स्वामी आदित्यवेश, आचार्या सुमेधा, विक्रम सिंह ठाकुर आदि अतिथियों ने डॉ. आर्य जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

इसी क्रम में अनेक अन्य पुस्तकों 'कर्म योद्धा कभी विश्राम नहीं लेते' डॉ अशोक कुमार रुस्तगी आर्य जी (अभिनंदन ग्रन्थ), सुभाष शतक, महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन के विविध आयाम, काव्य मंजूषा, व्यवहार भानु, महर्षि दयानंद की विशेषताएं, गो करुणा निधि, दयानंद लघु ग्रंथ संग्रह, आर्य समाज की मान्यताएं, आदि लगभग 50 ग्रंथों व पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। साथ ही, आर्यावर्त जन उत्थान न्यास (पंजी.) की ओर से धर्म, संस्कृति, शिक्षा, समाज सेवा, यज्ञ, योग व साहित्य आदि के क्षेत्र में निरूस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय कार्य करने वाले प्रो. विनय कुमार विद्यालंकार, डॉ. योगेश शास्त्री, डॉ. सुशील कुमार त्यागी अमित, आचार्य अखिलेश मेधावी, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, आचार्य चंद्र शेखर शास्त्री, श्री विनय कुमार जैन, श्री योगेश कुमार जैन, सीताराम आर्य, ललिता शास्त्री, सुकांत आर्य व सर्वोत्तम शर्मा आदि सहित देश भर से पधारे 40 से भी अधिक विशिष्ट जनों को विशिष्ट विभूति सम्मान एवं अलंकरण से सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर अभिनंदन ग्रन्थ के प्रधान सम्पादक श्री बृजेन्द्र सिंह वत्स, प्रोफेसर डॉ. ममता सिंह व डॉ. अरविन्द कुमार के सम्पादन कला की प्रशंसा की गई, तथा अभिनन्दनीय व्यक्तित्व डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) के प्रति उनके शिक्षण, लेखन, सम्पादन व सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विद्वानों द्वारा प्रकाश डाला गया।

समारोह में आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्या ललिता शास्त्री, डॉ. मधु चतुर्वेदी, श्री राव मुकुलमान सिंह, श्री विनय जैन, श्री संतोष माहेश्वरी, श्री योगेश जैन, प्रो. वीर वीरेन्द्र सिंह जी, प्रो. चारु मेहरोत्रा, प्रो. शेखर शर्मा, प्रो कीर्ति पंत, श्री ओम सपरा, डॉ० योगेश शास्त्री, प्रोफेसर विघ्नेश त्यागी, संतोष माहेश्वरी, नगर पालिका परिषद अध्यक्ष श्रीमती शशि जैन, आचार्य अखिलेश मेधावी, प्रो. वीर वीरेंद्र सिंह, डॉ. कुलदीप त्यागी, श्री महेंद्र आहूजा, डॉ. पी के जैन, डॉ. संयुक्ता चौहान, डॉ. वंदना रानी गुप्ता, प्रो. सुमन गुप्ता, भुवनेश शर्मा भुवन, डॉ. दीपक अग्रवाल, डॉ. यतींद्र विद्यालंकार, विमल किशोर वन्देमातरम्, खेमकरण शर्मा, सतेंद्र धारीवाल, अनिल रस्तोगी आदि सहित सैकड़ों की संख्या में शिक्षाविद, साहित्यकार, पत्रकार समाजसेवी, नेता, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि आदि सहित देश भर से पधारे गणमान्य जन उपस्थित रहे।

समारोह के अंत में प्रो बीना रुस्तगी ने सभी आगंतुक गणमान्य अतिथियों, उपस्थित महानुभावों व्यवस्था में लगे सहयोगियों, संपादक मंडल के सदस्यों, मीडिया आदि का हार्दिक आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगीत वंदे मातरम से हुआ तथा समापन राष्ट्रगान एवं प्रीतिभोज के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम कुशल संचालन जे.एस. हिन्दू पी.जी. कॉलेज अमरोहा के संस्कृत विभाग के असि. प्रोफेसर डॉ. अरविन्द कुमार तथा डॉ. वी. के. शुक्ला ने किया। वैदिक उद्घोषों तथा प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम भव्यता पूर्वक संपन्न हुआ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 809वां वेबिनार सम्पन्न

143वाँ महर्षि महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

महर्षि दयानन्द ने देश की दशा वा दिशा बदली– अनिल आर्य
महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चले– प्रवीण आर्य



शुक्रवार 30 अक्टूबर 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 143वें महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान दिवस पर ऑनलाइन विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों पर चर्चा हुई और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया और लोगों के सोचने व समझने की दिशा ही बदल डाली।उन्होंने पाखंड अंधविश्वास पर सीधा प्रहार किया वह एक निर्भीक सन्यासी थे। आर्य समाज रूपी संस्था की स्थापना करके समाज के चौकीदार का काम किया।उन्होंने कहा था कोई कितना ही करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है। उनकी प्रेरणा से सैकड़ों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। आर्य नेता प्रवीण आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं। आवश्कता उन पर चलने की है। स्वामी जी को वेदों वाला कहा जाता है उन्होंने लुप्त हुए वेदों को जर्मनी से मंगाकर उन्हें पुनर्स्थापित किया। आचार्य महेन्द्र भाई ने सुन्दर आयोजन के लिए बधाई दी। गायक कलाकार नरेंद आर्य सुमन, सुदेश आर्य, पिंकी आर्या आदि ने मधुर गीतों से उल्लासपूर्ण वातावरण बना दिया।

मनुर्भव विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

युवा नैतिक व सामाजिक कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हों–अतुल सहगल



सोमवार, 12 अक्टूबर 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में मनुर्भव विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 807 वाँ वेबीनार था। प्रख्यात विचारक अतुल सहगल ने मनुर्भव (मनुष्य बनो) विषय पर एक अत्यंत प्रेरणादायक व्याख्यान दिया। ऋग्वेद के इस महान और शाश्वत संदेश को केंद्र में रखकर आयोजित इस विशेष कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जन सामान्य और विशेष रूप से युवा पीढ़ी को उनके नैतिक व सामाजिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना तथा दिग्भ्रमित हो रहे आधुनिक समाज को एक नई और सकारात्मक दिशा प्रदान करना था। व्याख्यान की शुरुआत करते हुए वक्ता अतुल सहगल ने श्मनुर्भवश के वास्तविक और व्यावहारिक अर्थ को बहुत ही सरल शब्दों में स्पष्ट किया। उन्होंने मनुष्य तथा अन्य निम्न योनियों (पशुओं) के बीच के मूलभूत अंतर को रेखांकित करते हुए कहा कि केवल मानव शरीर पा लेने से कोई मनुष्य नहीं बन जाता। आहार (भोजन), निद्रा (सोना), भय (डर) और मैथुन (संतानोत्पत्ति) जैसी शारीरिक प्रवृत्तियाँ और जैविक आवश्यकताएँ मनुष्यों और पशुओं दोनों में पूर्णतः समान होती हैं। परंतु, ईश्वर प्रदत्त विवेक, चिंतनशीलता, आत्म– नियंत्रण और धर्म ही वे विशेष तत्व हैं जो मनुष्य को पशु जगत से अलग कर उसे श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। यदि हमारे दैनिक जीवन में उच्च नैतिक मूल्य, संवेदनशीलता और सामाजिक कर्तव्यों के प्रति निष्ठा नहीं है, तो रूप–रंग से इंसान दिखने के बावजूद हम केवल दो पैरों वाले सामाजिक पशु मात्र बनकर रह जाते हैं। इस वैचारिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में, वक्ता ने ऋग्वेद के मंडल 10, अध्याय 53 के सुप्रसिद्ध मंत्र 6कृष्मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्...६ की बेहद सारगर्भित और विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की। इस मंत्र का वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक अर्थ समझाते हुए उन्होंने बताया कि ईश्वर हमें केवल शारीरिक रूप से जन्म देकर संसार में अकेला छोड़ नहीं देता।वह इस मंत्र के माध्यम से हमसे यह आह्वान करता है कि हम अपने पुरुषार्थ और श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा वास्तविक अर्थों में श्मनुष्यश बनें। इतना ही नहीं, हमें स्वयं सुधरने के साथ–साथ समाज में दिव्य, परोपकारी, न्यायप्रिय और करुणा।जैसे गुणों से युक्त एक आदर्श व श्रेष्ठ समाज (दैव्यं जनम्) का निर्माण भी करना चाहिए। यह वैदिक मंत्र केवल एक सामान्य उपदेश नहीं है, बल्कि ईश्वर द्वारा मानवता को दिया गया एक अनिवार्य दिव्य आदेश है। अपने व्याख्यान के अगले चरण में वक्ता ने मनुष्य की श्रेष्ठ बुद्धि (Superior Intellect) और उसकी असीमित क्षमताओं के महत्व पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि ८४ लाख योनियों में ईश्वर ने केवल मनुष्य को ही गहन विचार करने, सही और गलत के बीच भेद करने तथा स्वतंत्र रूप से कर्म करने की आजादी (विवेक शक्ति) दी है। जहाँ पशु पूरी तरह से प्रकृति के नियमों और अपनी मूल प्रवृत्तियों से बंधे होते हैं और अपनी बुद्धि का विकास स्वयं नहीं कर सकते, वहीं मनुष्य अपनी इसी श्रेष्ठ बुद्धि के बल पर ब्रह्मांड के गूढ़ रहस्यों को समझ सकता है, विज्ञान की प्रगति कर सकता है और अंततः अपनी आत्मोन्नति कर मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। वक्ता ने अंत में सामान्य जनों का आह्वान करते हुए कहा कि इस अद्वितीय बुद्धि का सही उपयोग केवल व्यक्तिगत स्वार्थ, धन कमाने या भौतिक सुखों के उपभोग के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण, राष्ट्र उत्थान और चरित्र निर्माण के लिए होना चाहिए, तभी इस वेबिनार और श्मनुर्भवश के संदेश की सार्थकता है। मुख्य अतिथि सुधीर बंसल व अध्यक्ष कृष्ण कुमार यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीन आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।



शारदीय यज्ञ सम्पन्न–

शारदीय नवरात्र पर **'जन कल्याण यज्ञ'** 11 से 18 अक्टूबर तक सुन्दर वन पार्क, योजना विहार, दिल्ली मे परिषद के महामन्त्री महेन्द्र भाई के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। शिव कुमार ग्रोवर, भारत भूषण, विशाल, विकास, चन्द्र मणि अधिवक्ता, रमेश पाहवा, मुकेश गोस्वामी, प्रतिभा जुनेजा, विजया रानी शर्मा, यशोवीर आर्य, जयकिशन गोयल, महेश भार्गव, राजीव , शिशुपालसिंह आर्य काशीराम रजक आदि प्रमुख उपस्थित रहे।



स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद ने दोहरायी अपनी माँग

– अनिल आर्य

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970